A Newsletter of Maitree Jankalyan Samiti

मैत्री समूह

Chirping Sparrow

Year - 12, Issue - 1

गीत नया गाता हूँ

गीत नया गाता हूँ, गीत नया गाता हूँ
टूटे हुए तारों से फूटे वासंती स्वर
पत्थर की छाती में उग आया नव अंकुर
झरे सब पीले पात, कोयल की कुहुक रात
प्राची में, अरुणिमा की रेत देख पाता हूँ
गीत नया गाता हूँ, गीत नया गाता हूँ ।
टूटे हुए सपने की सुने कौन सिसकी ?
अंतर को चीर व्यथा, पलकों पर ठिठकी
वरदान नहीं मांगूगा, हार नहीं मानूंगा,
काल के कपाल पर, लिखता-मिटाता हूँ,
गीत नया गाता हूँ, गीत नया गाता हूँ ।

- अटल बिहारी वाजपेयी

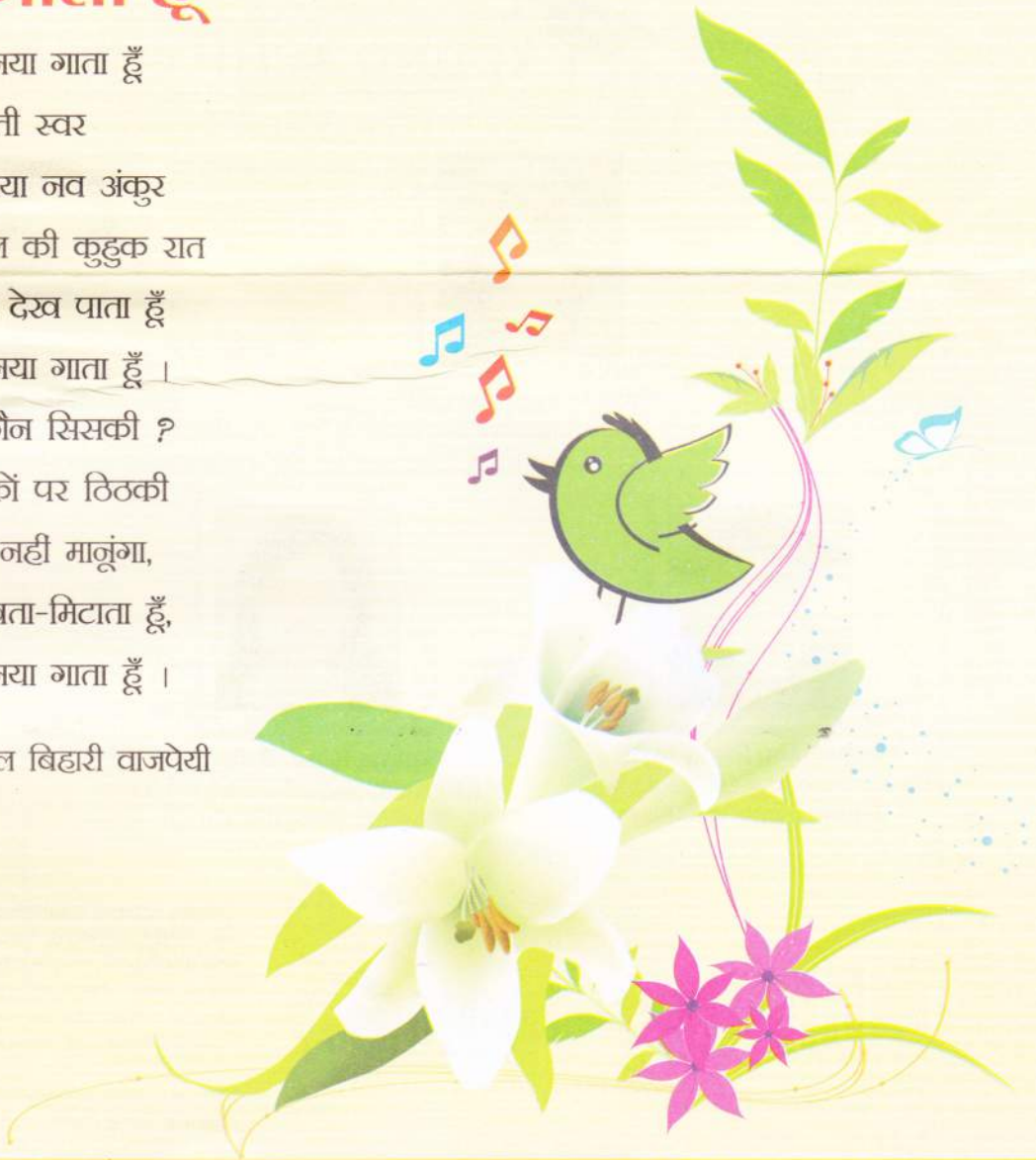

PRIDE OF SOCIETY

Mr. Satyendra Kumar Jain

Born in a small village in Uttar Pradesh, Mr. Satyendra Kumar Jain, has become a prominent name in the anti-corruption movement in India. His father was a teacher in Government school in Delhi and he learnt the moral values of honesty and sincerity from his father, very early in his life. He holds a bachelor's degree in architect and worked with Central PWD. Being disappointed with the rampant corruption in the government he quit his job and started a consulting firm. He joined the struggle against corruption with Anna Hazare and was an active contributor and leader in the historical Jan Lokpal movement.He joined Aam Aadmi Party after the movement and won the Delhi State assembly election from Shakur Basti.

He was selected as one of six cabinet ministers in the Delhi government with responsibilities of critical portfolios including Health and Industries. Mr. Jain is also an active social worker and is associated with social organizations like Drishti(a Chitrkoot based NGO which works for visually impaired girls and Sparsh(an NGO which works for mentally challenged children). He also helps organize the mass marriages for poor girls. He is a strict follower of moral values and resides in Delhi with his family.

YOUNG ACHIEVERS

Nidhi Jain, Sagar (MP)
Civil Judge Examinations Rank 1
LLB, LLM

Nimish Shah, Mumbai
IIM Kozhikode, CGPA 3.6/4.33
Working with Deutsche Bank

Megha Jain, Sagar (MP)
IIM Kozhikode, CGPA 3.43/4.33
Working with Vodafone

Ankita Kage, Belgaum
IIM Kozhikode, CGPA 3.3/4.33
Working with ABP Group

Siddharth Jain, Dubai
IIM Kozhikode, CGPA 3.1/4.33
Working with Asian Paints

Chirping Sparrow

Year - 12, Issue - 1

Chirping Sparrow is published by
MAITREE JANKALYAN SAMITI
Post Box No. 15, Vidisha, Madhya Pradesh - 464001
E-mail : maitreesamooh@hotmail.com, samooh.maitree@gmail.com
Website : www.maitreesamooh.com Mobile: 94254-24984
http://maitreesamooh.blogspot.com

It is circulated to all Young Jaina Awardees and friends of Maitree Jankalyan Samiti.

भाग्य और पुरुषार्थ

-डॉ. अनिल कुमार जैन

कुछ लोगों का सोचना है कि हमें जो कुछ प्राप्त हो रहा है, वह सब भाग्याधीन है। यदि नुकसान होता है तो वह भी भाग्य से और यदि कुछ फायदा है तो वह भी भाग्य से। जितना अपनी किस्मत में लिखा है, उतना ही मिलेगा। कुछ का कहना है कि समय से पहले तथा किस्मत से ज्यादा कुछ भी हासिल नहीं किया जा सकता।

दूसरी ओर कुछ का मानना है कि हम जो कुछ हासिल करते हैं, वह सब हमारी मेहनत का फल है या फिर हम मेहनत या पुरुषार्थ से सब कुछ हासिल कर सकते हैं। इस प्रकार भाग्य और पुरुषार्थ के मुद्दे पर कुछ कशमकश है। हम यहाँ इस बात की ही चर्चा करेंगे कि भाग्य और पुरुषार्थ क्या है, कौन कितने महत्त्व का है तथा कौन बड़ा या छोटा है।

बड़ा कौन भाग्य या पुरुषार्थ ?

इसी संदर्भ में एक बार एक पंडित जी ने कहानी सुनायी। दो दोस्त थे। एक का मानना था कि सब कुछ भाग्याधीन है, जबकि दूसरे का मानना था कि पुरुषार्थ से ही सब कुछ प्राप्त होता है। दोनों ने एक दिन सोचा कि क्यों न प्रयोग करके इसे देख लिया जाये। उन्होंने एक कमरे के एक आले में एक लड्डू रख दिया। कमरे का दरवाजा बंद कर दिया और अंधेरा कर दिया। दोनों ने तय किया कि देखते हैं कि लड्डू भाग्य से प्राप्त होता है या पुरुषार्थ से। भाग्य का पक्षधर एक कोने में बैठ गया लेकिन पुरुषार्थी को चैन कहाँ। वह लगा लड्डू खोजने और आखिर वह उस आले तक पहुँच गया जहाँ लड्डू रखा था। हाथ में उठाते ही वह जोर से चीख उठा, 'देखा पुरुषार्थ का फल, मैंने लड्डू पा लिया।' दरवाजा खोल दिया। वह पुरुषार्थी खुशी के साथ लड्डू खाने को ही था कि 'अरे मैं अकेला इसे खा रहा हूँ। आखिर वह भी तो मेरा दोस्त है।' यह सोचकर उसने उस लड्डू को आधा तोड़ा और अपने मित्र को दे दिया। दूसरा मित्र आधा लड्डू पाने पर जोर से बोल उठा, 'देखा मेरा भाग्य। मेरे भाग्य में भी लड्डू पाना लिखा था सो मिल गया।'

इस कहानी से बात जहाँ–की–तहाँ रह गयी। दोनों बराबर कारगर सिद्ध हुए, न कोई बड़ा, न कोई छोटा।

भाग्य का पलड़ा भारी ?

कई बार देखने में आता है कि बिना मेहनत किये ही या फिर बहुत कम मेहनत से सब कुछ मिल जाता है। दूसरी ओर एक व्यक्ति बहुत मेहनत करता है तब भी उसे कुछ नहीं मिल पाता। वस्तुतः मेहनत करने पर भी यह तय नहीं हो पाता है कि कार्य सिद्धि हो ही जायेगी। पुरुषार्थ करने पर भी वही स्थिति बनी रहती है जो भाग्य की। हो सकता है कि कार्य हो जाये, हो सकता है कार्य की सिद्धि न हो। ऐसी स्थिति में भाग्य का पलड़ा ही भारी नजर आने लगता है। तब सब कुछ भाग्याधीन दिखने लगता है।

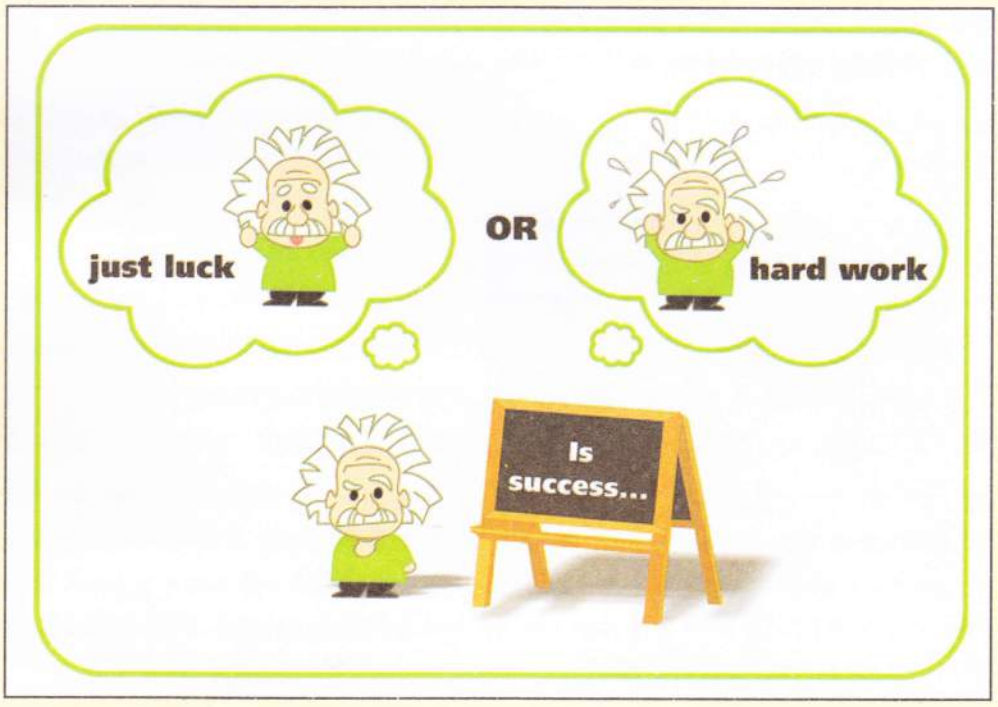

तो क्या पुरुषार्थ का कोई महत्त्व नहीं है? क्या पुरुषार्थ से कुछ भी प्राप्त नहीं किया जा सकता है? यह समझाने के लिए हमें पहले भाग्य और पुरुषार्थ को थोड़ा और समझना होगा।

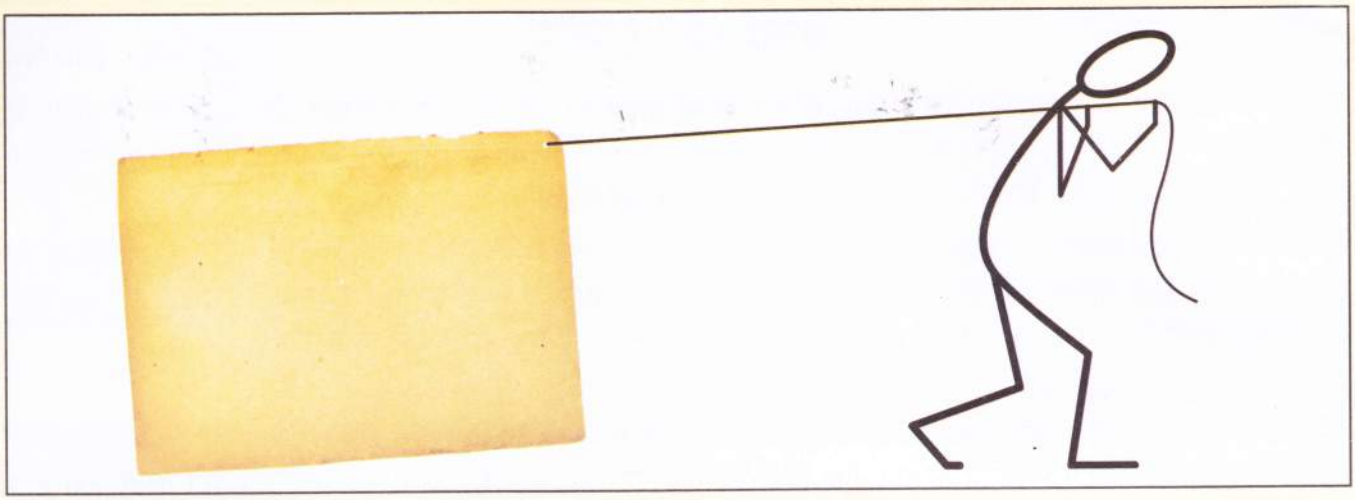

भाग्य, पुरुषार्थ और कर्म

भाग्य और पुरुषार्थ का सीधा सम्बन्ध कर्मों से है। भाग्य का सम्बन्ध भूतकाल (पूर्व) में बांधे हुए उन कर्मों से है, जो वर्तमान में उदय में आ रहे हैं और शेष भविष्य में उदय में आयेंगे और पुरुषार्थ का सम्बन्ध वर्तमान में बांधे जाने वाले उन कर्मों से है जो वर्तमान में उनका फल देने वाले हैं और कुछ भविष्य में उनका फल देंगे। यदि हम इस बात को समझ लें तो गुत्थियों को सुलझाया जा सकेगा।

मोटे तौर पर कर्मों को दो वर्गों में बाँटा जा सकता है – एक वे जो अनुकूल प्रभाव वाले हैं तथा दूसरे वे जो प्रतिकूल प्रभाव वाले हैं। अतः किसी कार्य की सिद्धि होने या न होने में कर्मों के चार घटकों का योगदान रहता है। ये हैं –

1. भूतकाल में बांधे अनुकूल कर्म,
2. भूतकाल में बांधे प्रतिकूल कर्म,
3. वर्तमान में बांधे अनुकूल कर्म,
4. वर्तमान में बांधे प्रतिकूल कर्म,

यदि अनुकूल कर्मों की शक्ति प्रतिकूल कर्मों की शक्ति से अधिक है तो कार्य की सिद्धि होगी और यदि इसके विपरीत है तो कार्य की सिद्धि नहीं होगी।

अब हम एक ऐसी स्थिति में हैं, जहाँ कार्य की सिद्धि होने या न होने की बात गणितीय रूप में प्रस्तुत कर सकें। माना कि किसी समय –

भूतकाल में बांधे हुए अनुकूल कर्मों की शक्ति = Kf (1)
भूतकाल में बांधे हुए प्रतिकूल कर्मों की शक्ति = Ku (1)
वर्तमान में बांधे हुए अनुकूल कर्मों की शक्ति = Kf (2)
वर्तमान में बांधे हुए प्रतिकूल कर्मों की शक्ति = Ku (2)

यदि [Kf(1) + Kf (2)] > [Ku (1) + Ku (2)] हो तो कार्य की सिद्धि होगी।
यदि [Kf(1) + Kf (2)] < [Ku (1) + Ku (2)] हो तो कार्य की सिद्धि नहीं होगी।

अतः हम कह सकते हैं कि किसी अमुक समय सभी अनुकूल कर्मों की शक्तियों का कुल योग उसी समय सभी प्रतिकूल कर्मों की शक्तियों के कुछ योग से अधिक है, तो इस समय कार्य की सिद्धि होगी, अन्यथा नहीं। यहाँ से अब हम भाग्य तथा पुरुषार्थ की गुत्थी को थोड़ा सुलझा सकते हैं। यदि कोई व्यक्ति पुरुषार्थ नहीं करता है (यानि कि Kf (2) और Ku (2) दोनों शून्य हैं) फिर भी कार्य की सिद्धि होती है, इसका अर्थ यह हुआ है कि Kf (1) बहुत–बहुत अधिक है Ku (1) से, अर्थात–
Kf (1) >> Ku (1) या Ku (1) << Kf (1)

यहाँ एक बात यह ध्यान रखने की है कि प्रति समय कर्मों की स्थिति एवं शक्ति एक सी नहीं रहती, वह सदा बदलती रहती है अतः किसी अमुक समय प्रतिकूल कर्म हावी हो रहे हों तो हो सकता है कि अगले क्षण वे प्रभावहीन हो जायें तथा थोड़े से पुरुषार्थ में ही कार्य की सिद्धि हो जाये। अब यहाँ से स्पष्ट हो गया कि कई बार बिना कुछ किये ही कार्य की सिद्धि क्यों हो जाती है, जबकि कई बार बहुत परिश्रम के बाद भी क्यों कार्य की सिद्धि नहीं हो पाती है।

SAMADHI (SALLEKHNA)

Shri Shanti Lal Ji Jain was born on March 13, 1938 in Ambah, Morena (M.P.). He did B.Sc. (Engg.), M.Tech. and joined Madhya Pradesh Electricity Board. He worked for 40 years and retired as Executive Director, M.P. Electricity Board. Two years after his retirement, in the year 1997, he met Munishri Kshamasagarji and without any preaching, he realized need for his self-emancipation. He later on learnt basic concepts of Jainism from Munishri. He accepted several vows and was blessed with the used Picchika of Munishri Kshamasagarji in the Pichchi Parivartan of 1997.

He devoted his entire time in study and translation of several religious books/scriptures in English under the guidance of Munishri. Some of his published and translated books are ABC of Jainism (Jainism for beginners in English), Self-enlightenment (Translation and Commentary on Chhahddhala), Practical Path (Translation of Ratnakarand Shravakachaar), Preaching Paradise (Translation of Pravachan Parv), Preaching Salvation (Translation of Pravachan Paarijaat), Aashirvad Ka Vigyaan, etc.

In 2006, he took Saat Pratimaas (Supreme Vows) of a religious householder. Later he took Nav Pratimaas (Nive vows) and spent most of his time in Shrut Dhaam, Bina. Subsequntly he took Elak Diksha. In the last phase of his life, he took Muni Dikhsa as Muni Shri Aadi Sagarji and ended the journey of current life by taking Samadhi (sallekhna) on April 3, 2014. He was one of the earlier member of Maitree Samooh and was also featured in the Pride of Society section of Chirping Sparrow (Jul-Sep 2006) for his contributions to the society. We appreciate his life as a model for Grihasthas and wish for Sadgati for his soul.

-Maitree Samooh

YOUNG JAINA AWARD 2013

10th Class

Pankti Jain
Nadehi (Uttarakhand)
10th CBSE GPA 10.0

Srasthi Jain
Seoni (M.P.)
10th CBSE GPA 10.0

Prerna Jain
Kalyan (M.H.)
10th CBSE GPA 10.0

Aarogya Rakhecha
Bikaner (Rajsthan)
10th CBSE GPA 10.0

Priyansh Jain
Jaipur (Rajasthan)
10th CBSE GPA 10.0

Shourya Jain
Jabalpur (M.P.)
10th CBSE
GPA 10.0

Anuja Jain
Dewas (M.P.)
10th CBSE GPA 9.8

Simran Jain
Jaipur (Rajasthan)
10th CBSE GPA 9.8

Akinchan Jain
Tikamgarh (M.P.)
10th CBSE GPA 9.8

Shrishti Jain
Jaipur (Rajasthan)
10th CBSE GPA 9.6

Shalini Jain
Jabalpur (M.P.)
10th CBSE GPA 9.4

Priya Jain
Khurai (M.P.)
10th MP Board 92.50%

Vishal Dodal
Aurangabad
(Maharastra)
10th M.S.
Board 92.20%

Nirali Mehta
Jamnagar (Gujarat)
10th Gujarat Board 92.17%

Meenal Jain
Phulera (Rajasthan)
10th Raj. Board 90.17%

Mayank Jain
Patera (M.P.)
10th MP Board 92.50%

Ankit Jain
Jhansi (U.P.)
10th CBSE GPA 9.2

Khushi Jain
Pachewar (Rajasthan)
10th Raj. Board 89.33%

Silky Jain
Vidisha (M.P.)
10th MP Board 90.80%

Akanksha
Khedkar
Mumbai (M.H.)
10th M.S.
Board 88.00%

Surabhi Jain
Kushalgarh
(Rajasthan)
10th Raj. Board
87.66%

Mahima Jain
Damoh (M.P.)
10th MP Board 89.20%

Mrudima Jain
Khandwa (M.P.)
10th CBSE, GPA 8.9

Khushboo
Hingad
Khachrod
(M.P.)
10th MP Board
87.00%

Ankit Jain
Sagar (M.P.)
10th MP Board 84.50%

12th Science

Yashaswa Jain
Jabalpur (M.P.) 12th Science
CBSE 95.60%, IIT JEE Score
198; MP PET Rank 729

Rachit Jain
Jaipur (Rajasthan)
12th Science CBSE 95.20%
KVPY Exam Qualified

Aagam Jain
Chhindwara (M.P.) 12th Science
CBSE 94.40%,
MPPET Rank 120

Gaurav Bhagat
Jaipur (Rajasthan)
12th Science CBSE 94.40%

Dhaval Vora
Anand (Gujarat)
12th Science CBSE 93.40%
IIT JEE Percentile 97.53

Shantanu Jain
Indore (M.P.)
12th Science CBSE 93.20%
IIT JEE Score 192

Pranav Patni
Jaipur (Rajasthan)
12th Science CBSE 93.00%
RPET Rank 229

Ankur Sethi
Jodhpur (Rajasthan)
12th Science CBSE 92.20%
RPET Rank 654

Chetan Jogi
Mumbai
12th Science
MS Board 92.00%
IIT JEE Score
83.50; MSCET
Rank 820

Saloni Khasgiwala
Indore (M.P.)
12th Science CBSE 91.80%

Sourabh Jain
Tikamgarh (M.P.)
12th Science
MP Board 91.60%

Kriti Jain
Hathras (U.P.), 12th Science
ISC Board 90.60%
100% marks in Mathematics

Abhinav Jain
Shivpuri (M.P.)
12th Science
CBSE 90.60%

Ankush Jain
Kota
(Rajasthan)
12th Science
CBSE 88.40%

Aishwarya Jain
Noida (U.P.)
12th Science CBSE 86.80%

Sanyam
Jhanjhri
Chhindwara
(M.P.)
12th Science
CBSE 86.80%

Shreyans Jain
Ratlam (M.P.)
12th Science
MP Board 86.00%

Utkarsh Narad
Shahdol (M.P.)
12th Science
MP Board 84.40%

Mukul Jain
Patera (M.P.)
12th Science
MP Board 83.00%

Somya Jain
Sagar (M.P.)
12th Science
MP Board 74.60%

12th Commerce

Nirjara Jain
Meerut (U.P.)
12th Commerce
CBSE 93.00%

Rahul Jain
Jaipur (Rajasthan)
12th Commerce CBSE 92.00%
CPT 73.50%

Vidhi Jain
Sonepat (Haryana)
12th Commerce
CBSE 87.60%

Shivani Jain
Kotma (M.P.)
12th Commerce
MP Board 87.20%

12th Commerce

Muskan Jain
Jabalpur (M.P.)
12th Commerce
MP Board
86.20%

Subhanshu Jain
Indore (M.P.)
12th Commerce CBSE 85.60%
CPT 56.50%

Palak Jhanjhri
Chhindwara
(M.P.)
12th Commerce
CBSE 84.60%
1st Rank in
School

Shreya Jain
Bhillai (C.G.)
12th Commerce
CG Board 83.40%

Mahak Jain
Kotma (M.P.)
12th Commerce
MP Board 83.20%

Ojasvi Jain
Delhi
12th Commerce
CBSE 80.00%

Ankit Jain
Khurai (M.P.)
12th Commerce CBSE 77.80%
CPT 69.00%

Naman Jain
Jaipur
(Rajasthan)
12th Commerce
CBSE 76.00%
CPT 81.00%

Competitive Exams/Others

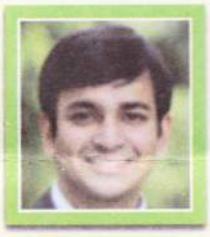

Bharat Jain
Jaipur (Rajasthan)
CAT 99.95 Percentile

Pankaj Jain
Jaipur (Rajasthan)
GATE 99.8 Percentile

Bharatheeswar R
Chennai (Tamil Nadu)
CA 51.00%

Swati Jain
Udaipur (Rajasthan)
PhD (NIT, Jaipur)

Sweeti Jain
Dewas (M.P.)
PhD

Mitesh Jain
Kotma (M.P.)
UPSC CAPF AC EXAM 2013
1st Rank in reserve list

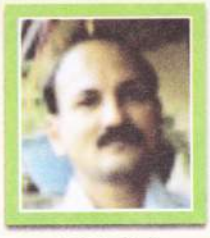

Ashish Shah
Ahmedabad (Gujarat)
Limca Book of Records, Till Date
57 Degrees/Courses/Certificates

Graduation

Shobit Jain
Kota
(Rajasthan)
B. Tech
(IIT Kanpur)
8.12

Anubha Jain
Bangalore (Karnataka)
B.Tech (IIT Roorkee) 8.1

Ravi Jain
Newai
(Rajasthan)
B.Tech
(NIT, Jaipur)
9.38, 3rd Rank
in College

Vishakha Jain
Kota (Rajasthan)
B.Tech (NIT, Jaipur) 8.95

Ravi Jain
Indore (M.P.)
B.E. (RGPV Bhopal) 8.34

Graduation

Surbhi Jain
Bhilwara (Rajasthan)
B.E. (Udaipur) 8.03
2nd Rank in College

Rahul Jain
Thane (M.H.), B.E. (UP Technical University, Lucknow) 79.80%
1st Rank in College

Paridhi Jain
Jaipur (Rajasthan)
B.E. (Raj. Technical University, Kota) 76.75%

Sarthak Navlakha
Kharchod (M.P.)
B.E. (RGPV, Bhopal)
78.63%

Nidhi Jain
Garhakota
(M.P.)
B.E. (TRUBA College, Bhopal)
78.20%

Aakarsh Jain
Vadodara (Gujarat)
B.E. (North Maharashtra University)
76.93%,1st Rank in College

Prathishtha Bhushan
Jabalpur (M.P.)
B.E. (RGPV, Bhopal)
75.78%

Mayank Jain
Bhopal (M.P.)
B.E. (RGPV, Bhopal)
71.22%

Ankit Choudhary
Patharia (M.P.)
B.E. (RGPV, Bhopal) 71.06%

Jhalak Jain
Kotma (M.P.)
B.E.
(RGPV, Bhopal) 78.90%

Bhumika Jain
Panna (M.P.)
B.Sc.
(DAVV Indore)
78.20%

Surbhi Jain
Ratlam (M.P.)
MBA (DAVV Indore)
77.89%

Anjali Jain
Chhindwara (M.P.)
BCA (Dr. Hari Singh Gour University, Sagar) 77.88%

Teena Jain
Tonk (Rajasthan)
B. Tech. (Banasthali University) 75.40%

Prachi Jain
Indore (M.P.)
B.Com. (DAVV Indore)
75.08%

Abhishek Jain
Tikamgarh (M.P.)
M.Com. (Dr. Hari Singh Gour University, Sagar) 63.80%

Gaurav Jain
Indore (M.P.), B.Tech.
(Symbiosis University, Pune)
3.68/4, 1st Rank in College

Ashish Jain
Kota (Rajasthan)
Graduation (ICAI) 57.75%

Ashish Saraf
Washim (M.H.)
B.Tech.
(Dr. B.A.T.U. Lonere) 7.22

Reshuka Jain
Damoh (M.P.)
B.Ed. 72.00%

Supriya Jain
Sagar (M.P.)
MBBS

Abhishek Jain
Raipur (CG)
DIM, PGDIM, PGDRM

Rajul Jain
Deori (M.P.), M.Tech (SRM University Chennai) 8.85
2nd Rank in College

Deepshikha Jain
Khurai (M.P.), M.Com
(Dr. Hari Singh Gour University, Sagar) 87.50%, 2nd Rank in College

Young Jaina Award 2014

विगत वर्षों की तरह इस वर्ष भी मैत्री समूह विशिष्ट योग्यता प्राप्त करने वाले जैन छात्र-छात्राओं से Young Jaina Award 2014 के लिए आवेदन आमंत्रित करता है।

वर्ष 2014 मे 12वीं कक्षा (State/CBSE) में 75% से अधिक, 10 वी कक्षा (State/CBSE) में 85%से अधिक अंक प्राप्त करने वाले एवं CPMT/State PMT, IIT, NTSE, PET में चयनित होने वाले जैन छात्र-छात्राएँ हमारी website www.maitreesamooh.com पर visit कर online form भर सकते है या form download कर उसे भर कर भेज सकते है।

Form भेजने हेतु पता है-मैत्री समूह, पोस्ट बॉक्स नं. 15, विदिशा, पिन-464002

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें-

9827440301, 09425424984

Maitree Samooh invites applications from the talented Jain students for Young Jaina Award 2014.

Students with more than 75% in class XII or more than 85% marks in class X or selection in IIT JEE/PET/ NTSE/ AIPMT/ PMT in the academic year 2013-14 can either fill the form online or send the filled form to the following address:

Last Date - 30th October, 2014
अंतिम तिथि 30 अक्टूबर 2014

Address: Maitree Samooh, Post bag No. 15 Vidisha, Madhya Pradesh
Phone No.: +91 94254 24984, +91 9827440301
Email: samooh.maitree@gmail.com, maitreesamooh@hotmail.com
Apply Online / Download Form: www.maitreesamooh.com

QUESTIONS & ANSWERS

Q. आरती का **science** बताइए ?

मेघा जैन, सागर

A. असमंतात रति। जिसमें हम भगवान के प्रति अपने सम्पूर्ण अनुराग या श्रद्धा को व्यक्त करते हैं, उसे ही आरती कहते हैं। भगवान के पूरे शरीर का दर्शन हो सके इसीलिए हम उसे पहले मुख मुद्रा पर घुमाते हैं, बाद में फिर नाभि तक और बाद में चरणों तक। इस तरह आरती को तीन बार करने से अपने मन में भगवान की स्पष्ट छवि आ जाती है। और यही उसका मुख्य उद्देश्य है कि हम भगवान की स्पष्ट छवि को अपने हृदय में विराजमान कर सकें। रही बात इसके science की, तो दीपक से आरती करने में दो चीजें हैं। एक तो पूरा वातावरण निर्मल होता है और हमारी आँख की ज्योति पर ज्यादा बल नहीं पडता। ये जो बिजली वाली रोशनी है, दिन में अगर कोई सूर्य के प्रकाश को छोड करके इसमें ही लगातार काम करे, तो आखें खराब हो सकती हैं। तो इस तरह से देखें तो दीपक की रोशनी में भगवान के दर्शन करना अर्थात अपने प्राणों की और जीव राशि की रक्षा करना है। असल में दीपक से ज्यादा हिंसा कृत्रिम बिजली में है। वैसे तो एक बटन ही दबाना होता है लेकिन कहाँ से आती है, ये बनते देखें जहाँ बिजली बनती है। संज्ञी पंचेन्द्रिय कछुए, मछली, सब मर जाते हैं उसमें, तब जाकर के बिजली उत्पन्न हो पाती है। अत्यंत महान हिंसा का काम है। अतः अहिंसा के दृष्टिकोण से दीपक रखा गया है। आरती में देखा जाए तो दीपक महत्त्वपूर्ण नहीं है, भगवान के गुणगान करना महत्त्वपूर्ण है। आरती का मुख्य उद्देश्य था भगवान के समस्त गुणों के प्रति अनुराग व्यक्त करना, तो कैसे करेंगे? गा के, बजा के, नाच के, तो ये प्रक्रियाएँ उसमें शामिल हो गयीं।

Q. कुएँ का पानी रुका हुआ होता है, फिर भी शुद्ध क्यों माना जाता है ?

प्रीति जैन, नोएडा

A. कुएँ का पानी रुका हुआ होने के बाद भी निरंतर निकलता रहता है और नए स्रोत से उसमें आता रहता है, इसीलिए उसे निर्मल माना गया है। नया स्रोत उसमें हमेशा बना रहे और पानी निकलता रहे , तब वो कुएँ का पानी शुद्ध माना गया है। अहिंसक पानी और शुद्ध पानी में अंतर है। कुएँ का पानी अहिंसक है, और दूसरे पानी शुद्ध हो सकते हैं, लेकिन वे हिंसक हैं। जैसे पानी साफ करने की प्रणाली में ब्लीचिंग पाउडर और फिटकरी साफ होकर फिर नलों में पानी आता है। पहले ही सारी जीव राशि मार दी , फिर बाद में क्या शुद्धि रही उसकी? और sewage pipeline में से होके भी आ रहा है। टोंटी बस अलग है, पानी वही है, ये किचन की, और ये टॉयलेट की। ये तो बस मन समझाने के लिए है कि टोंटी अलग अलग है, बाकि पानी तो वही है जिसमें अशुद्धि है। हैंडपंप का या tubewell का पानी भी घर्षित होके आता है जिससे हिंसा होती है, तो उस घर्षण की वजह से भी, और उसमें जो जीवाणी है वो बहुत सहज रूप से करना बहुत कठिन है। इन वजहों से अभी आचार्य महाराज की परंपरा में ये चीजें शामिल नहीं की है उन्होंने। अन्य परम्पराओं में इस चीज को शामिल कर लिया है, हैंडपंप इत्यादि का पानी भी उपयोग में आने लगा है।

Q. सल्लेखना नहीं ली हो, तो मृत्यु से पहले इस प्रकार के कुछ भाव थे कि मेरे जाने का समय आ गया और हॉस्पिटल के बिस्तर से मुझे नीचे चटाई पर लिटा दो, इस क्रिया के बाद हाथ पर णमोकार का जाप करते हुए देह त्याग दी तो उसे क्या कहेंगे ?

अनुज जैन, गढ़ाकोटा

A. ये अंतर्मुहूर्त के लिए ली गयी सल्लेखना ही है। मरण निकट आते जान करके सब परिग्रह का त्याग कर दिया, मुझे अब नीचे लिटा दो, मेरा कुछ भी नहीं है। अन्न जल इत्यादि सबका त्याग। अंतर्मुहूर्त के लिए भी ऐसा कर दिया तो समझो आपके परिणाम उज्ज्वल हैं। आयु बंधेगी तो अच्छी ही बंधेगी, या तो अच्छी आयु बंध चुकी होगी, इसीलिए ऐसे परिणाम हो रहे हैं। दोनों ही चीजें हैं, अगर आयु अच्छी बंधी होगी तो आखिरी समय अच्छे परिणाम से मर रहे हैं, और अगर आयु नहीं भी बंधी होगी तो अच्छे परिणामों से अच्छी आयु बंधेगी। ये भी सल्लेखना का एक प्रकार है भैया। त्याग अगर कर दिया है तो वो सल्लेखना है।

यदि आपकी कोई शंका या प्रश्न है, तो हमें लिख भेजिये। मुनिश्री द्वारा उसका उत्तर दिया जाकर शंका का समाधान किया जायेगा।

संस्मरण

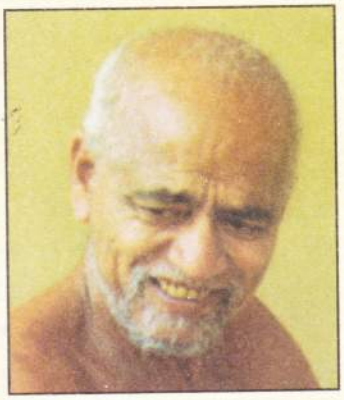

निर्दोष-चर्या सजगता

वे आहार–चर्या के लिए निकले हैं। चलते–चलते निमिष मात्र में मानो उन्होंने सारे परिवेश को देख लिया है और धीमे, सधे हुए कदमों से, आत्मलीन रहकर भी वे आगे बढ़ रहे हैं। मैं उनकी इस सहज छवि को देखकर चकित हूँ । सब और से एक ही आवाज आ रही है कि, 'भो स्वामिन! यहाँ पधारें, यहीं ठहरें। आहार जल शुद्ध है।' सोच रहा हूँ कि यह श्रद्धा और प्रेम से दी जाने वाली भिक्षा अनूठी है। देने वाला अपना सर्वस्व देने के लिए उत्सुक है, पर पाने वाला इतना निश्चिंत है कि पाने योग्य जो है, वह उसके पास हमेशा से है। उसे अपने से अन्यत्र कहीं और कुछ और नहीं पाना है। इस देह के निर्वाह और तप की वृद्धि के लिए जो मिलना है वह मिलेगा, उसे मिलाना नहीं है। प्रासुक आहार की मात्र गवेषणा है, आतुरता नहीं है। देखते–देखते एक अतिथि की तरह, घर के द्वार पर द्वारापेक्षण के लिए खड़े श्रावकों के समीप, उनका ठहर जाना और आनन्द विभोर होकर लोगो का उन्हें श्रद्धा भक्ति से पडगाहन कर भीतर ले जाना, उच्च स्थान पर बिठाना, पाद–प्रक्षालन करके चरणोदक सिर–माथे चढ़ाना, पूजा करना और मन, वचन, काय तथा आहार–जल की शुद्धि कहकर उन्हें विश्वस्त करना, झुककर नमोस्तु निवेदित करके आहार जल ग्रहण करने की प्रार्थना करना, यह सब इतने सहज व्यवस्थित ढंग से होता रहा कि मैं मंत्र–मुग्ध सा एक और खड़े–खड़े देखता ही रह गया।

सुना है कि आहार में वे रस बहुत कम लेते है। सो देख रहा हूँ कि ऐसा कौन सा रस उनके भीतर झर रहा है, जो बाहर के रस को गैरजरूरी किए दे रहा है। एक गहरी आत्म–तृप्ति जो उनके चेहरे पर बरस रही है वही भीतरी रस की खबर दे रही है और मैं जान गया हूँ कि रस सब भीतर हैं। ये भ्रम है कि रस बाहर है। तभी तो बाहर से लवण का त्याग होते हुए भी उनका लावण्य अद्भुत है। मधुर रस से विरक्त होते हुए भी उनमें असीम माधुर्य है, देह के दीप में तेल (स्नेह) न पहुँचने पर भी उनमें आत्मस्नेह की ज्योति अमंद है। दही का परित्याग करके माने वे सभी के मन का पारस्परिक खट्टापन हटाने में लगे हैं। सारे फल छोड़ देने के बाद भी लोगों के लिए सचमुच बहुत फलदायी हो गए हैं।

उनकी संतुलित आहार चर्या देखकर लगा कि शरीर के प्रति उनके मन में कोई गहन अनुराग नहीं है। वे उसे मात्र सीढ़ी बनाकर आत्मा की ऊंचाइयाँ छूना चाहते हैं।

मुनि क्षमासागर जी, 'आत्मान्वेषी' से साभार

कविता

रेत पर पैरों की छाप

नदी के किनारे
रेत पर पड़ी
अपने पैरों की छाप
सोचा
लौटकर उठा लाऊँ।
मुड़कर देखा, पाया
उठा ले गयीं हवाएँ
मेरी छाप अपने आप।
अब मन को
समझाता हूँ
कि हवाएँ सब
दुश्मन की नहीं होतीं
जो मिटाने आती हों
हमारी छाप।
असल में,
अहं की रेत पर
बनी हमारी छाप
मिट जाती है
अपने-आप।

मुनि क्षमा सागर जी
अनुवाद - श्रीमती सुनीता जैन
'मुक्ति' से साभार

Footprints On Sand

I thought I should go
and retrieve my footprints
from the sand at the river bank.
As I turned, I saw
the wind had blown away
my footprints on its own.
Now I console myself
that the winds which blow our way
to extinguish us
are not always of our enemy's.
the print we leave
on our ego's sand
are swept away on their own.

जीवन की सम्भावनाएं

- प्राचार्य निहाल चंद जैन, बीना

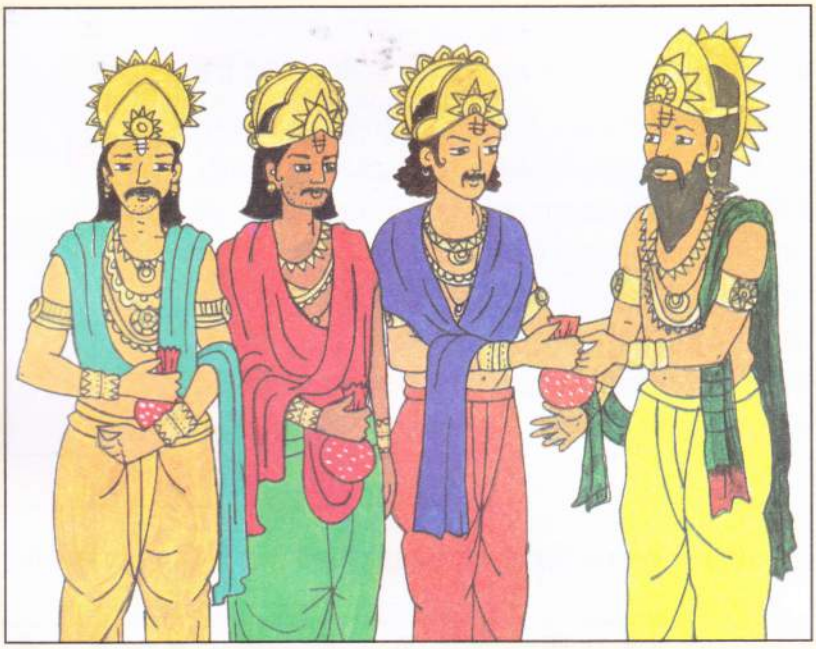

यह महत्त्वपूर्ण नहीं है कि हम क्या हैं, बल्कि महत्त्वपूर्ण यह है कि हम क्या हो सकते हैं। हमारा जीवन अनंत संभावनाओं का आगार है। यह हमारा पुरुषार्थ होता है कि उन सम्भावनाओं में से हम कितनी को साकार कर पाते हैं।

पुरुषार्थ गलत दिशा की ओर मुड़ गया, तो जो भी घटित होगा वह गलत होगा। सकारात्मक पुरुषार्थ ऐसी सम्भावना को मूर्त करेगा, जो जीवन के लिए मंगलकारी सिद्ध होगी। जब व्यक्ति बाहर और भीतर दोनों ओर से सोया हुआ होगा, तब उसे असफलता का खाली आकाश ही दिखाई देगा। लेकिन यदि वह बाहर और भीतर से सजग होगा तो उसकी सम्भावना पत्थर पर भी पौधा अंकुरित कर देगी।

एक राजा के तीन बेटे थे। राजा वृद्ध हो गए थे और वे योग्य एवं कुशल युवराज को ही राज्य का उत्तरदायित्व सौंपना चाहते थे। राजकुमार का चयन करने के लिए उन्होंने एक उपाय सोचा। प्रत्येक राजकुमार को सौ–सौ स्वर्ण मुद्राएं देकर यह आदेश दिया कि वे एक माह के भीतर पूरे राजमहल को अपनी पसंद की वस्तु से भर दें। बड़े राजकुमार ने विचार किया, 'इतना बड़ा राजमहल और गांठ में केवल सौ मुद्राएं। इतनी मुद्राओं से कौन सी वस्तु क्रय की जाकर राजमहल को संपूरित किया जा सकता है? हाँ, यह अवश्य है कि नगर का कूड़ा–कर्कट इकट्ठा करवा लिया जाए और उसे भरवा दिया जाए।'

उसने नगर–निगम के अधिकारियों को सारे नगर का कूड़ा–कर्कट एक जगह डलवाने को कह दिया। दूसरा राजकुमार अहंकारी था, बोला, 'बूढ़े बाप का दिमाग खराब हो गया है, जिसने केवल सौ स्वर्ण–मुद्राओं से पूरे राजमहल को भरने की आज्ञा दी। दस–बीस हजार स्वर्ण–मुद्राएं दी होतीं तो कुछ सोचा भी जा सकता था। हाँ, यह हो सकता है कि इन मुद्राओं को जुए में दांव पर लगा दें। जीत की बाजी मारकर अवश्य ही हजार मुद्राएं कर लेंगे।'

उसने दांव पर लगा दी वे स्वर्ण–मुद्राएं, लेकिन बाजी हार बैठा। सौ मुद्राएं भी उसके हाथ से खिसक गईं। खाली हाथ राजमहल आ गया और तनाव में दिन बिताने लगा। तीसरा राजकुमार बुद्धिमान और प्रतिभाशाली था। वह उस दिन की प्रतीक्षा में बैठा था जब राजमहल भरने को कहेंगे।

समयावधि पूरी होने पर पिता ने तीनों युवराजों को बुलाया। पहले राजकुमार से जानना चाहा कि वह राजमहल को किस वस्तु से भरना चाह रहा है। युवराज ने कूड़े के पहाड़ की ओर राजा का ध्यान आकृष्ट किया और बोला, 'इतना सस्ता कूड़ा ही हो सकता है जिससे महल सौ स्वर्ण–मुद्राएं खर्च करके भरा जा सके।'

राजा का दिमाग कूड़े के ढेर की बात सुनकर उसकी काल्पनिक बदबू से भर गया। दूसरा राजकुमार, अकर्मण्य, हाथ पर हाथ रखे बैठा था। वह तो मूलधन भी खो चुका था। राजा ने तीसरे राजकुमार से जानना चाहा तो उसने विनम्र भाव से कहा, 'मेरे तात् महाराज, मेरे साथ चलकर राजमहल के प्रत्येक कक्ष का निरीक्षण कर लें। आपको वस्तु का साक्षात्कार स्वयं हो जाएगा।'

उसने एक–एक करके सभी राज–कक्षों में मोमबत्तियां और सुगंधित अगरबत्तियां जला दीं। सारे कक्ष कुछ ही क्षणों में प्रकाश और भीनी–भीनी सुगंध से भर गए।

क्या तीनों राजकुमार हमारे जीवन की तीन संभावनाओं के प्रतीक नहीं हैं? विवेक शून्य और अज्ञानी अपने जीवन को वासना और विषाद के कूड़े–कर्कट से ही भर लेते हैं।

ऐसे लोग घृणा, द्वेष और प्रतिशोध को अपनी नियति बना लेते हैं। दूसरे वे लोग हैं जो जीवन को जुआ बना लेते हैं। लेकिन तीसरे ऐसे प्रज्ञाशील पुरुष होते हैं जो जीवन को आलोकमय और सद्‌गुणों की सुरभि से भर लेते हैं। वे परोपकार के लिए जीते हैं और चराचर जीवों के कल्याण के लिए समर्पित होकर निर्वाण प्राप्त करते हैं। वे 'असतोमा सदगमय', 'तमसो मा ज्योतिर्गमय' के जीवन के मूल–मंत्र को आत्मसात् कर 'ज्योतिर्धर' बन जाते हैं।

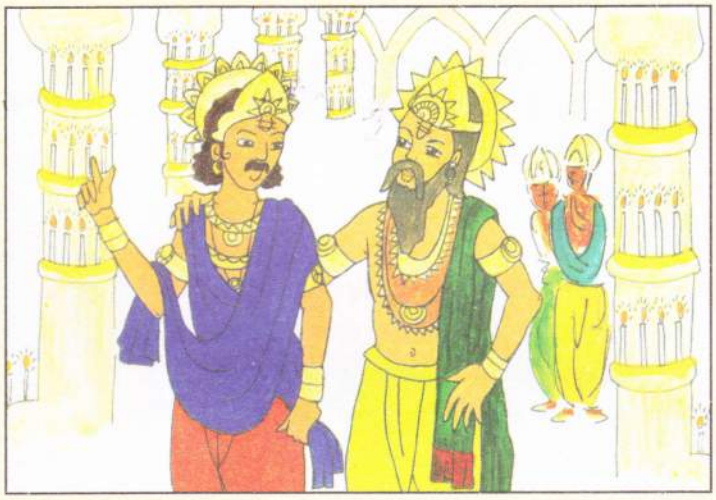

Chirping Sparrow की पिछली प्रति में दी गयी तीर्थ पहचानो प्रतियोगिता के सही उत्तर :

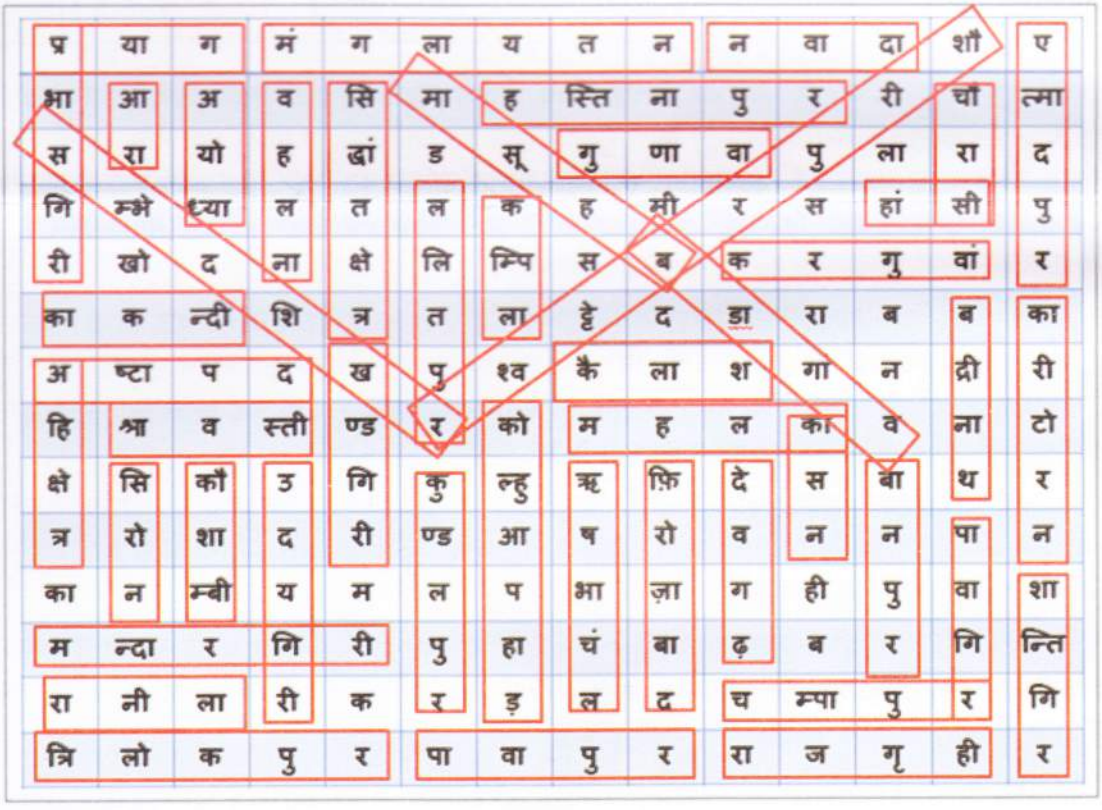

1. शौरीपुर
2. बटेश्वर
3. मंगलायतन
4. कोल्हुआ पहाड
5. सिद्धांत क्षेत्र
6. कुण्डलपुर
7. फिरोजाबाद
8. मंदारगिरि
9. उदयगिरी
10. कारीटोरन
11. एत्मादपुर
12. प्रभासगिरी
13. हस्तिनापुर
14. ऋषभांचल
2. सम्मेद शिखर
16. ललितपुर
17. राजगृही
18. पावापुर
19. चम्पापुर
20. महलका
21. वहलना
22. देवगढ
23. बद्रीनाथ
24. बडागांव
25. अष्टापद
26. अहिक्षेत्र
27. बहसूम
29. करगुवां
30. शांतिगिर
31. खण्डगिरी
32. पावागिर
33. श्रावस्ती
34. रानीला
35. कौशाम्बी
36. नवादा
37. गुणावा
38. प्रयाग
39. कम्पिला
40. काकन्दी
28. बानपुर
42. सिरोन
43. कैलाश
44. चौरासी
45. कासन
46. आरा
47. हाँसी

मैं 'गाँव' हूँ

मैं 'गाँव' हूँ,
पर वक्त की मार से,
बदल रहा हूँ हर पल,
पल–पल खो रहा हूँ,
अपना अस्तित्व,
मेरे तालाबों पर,
बन गए हैं महल,
खेतों की हरियाली,
बन गई है कंकरीट,
अब कोई भी,
गर्मी की शांति को,
नहीं रोपता है,
बरगद, पाकड़ और पीपल,
शायद इसीलिए,
राहगीर इस ओर नहीं आते,
और न ही लगता है,
कोई प्याऊ,
प्यासा गला सींचने को,
मंदिरों में घंटी की आवाज,
कम हो चली है,
वक्त कहाँ है अब,
पूजन–अर्चन का,
मैं बदल रहा हूँ,
गौधूलि वेला में,
गायों के गले की घंटी,
अब नहीं बजती,
और न ही उठती है,
उनकी पदचाप से धूल,
हाँ अब इसकी जगह ले ली है,
उद्योगों से निकलने वाले,
धुएँ और सायरन ने,
नित घुट रहा है,
मेरी संस्कृति का गला,
जिसे वर्षों सँवारकर रखा मैंने,
अब बच्चे नहीं करते,
बड़ों का सम्मान,
भूल गए आदर सूचक शब्द,
गाँव से निकलने वाली सड़क पर,
कान्वेंट जो बन गया है,
विकास की अंधी आंधी में,
उजड़ गए सैकड़ों घर,
बिखर गए परिवार,
एक ही घर में जलते हैं,
कई चूल्हे,
कंकरीट के घरों में रहने वालों के,
दिल भी पत्थर हो गए,
मैं 'गाँव' हूँ,
कहाँ जा रहा हूँ मुझे नहीं पता,
लोग इसे ही कहते हैं विकास,
पर मैं बदल रहा हूँ,
हर पल, पल–पल।

-अनिमेष जैन
animeshjain0001@gmail.com

You Brought Me All The Stars

There is some unstated elegance about him
He reflects the light, when paths are dim
I feel so lucky; he is my mentor and my maker
Yes! I am the daughter of that glowing heavenly master

He taught me to be pristine, in everything I do
Be generous and kind, were few teachings too
Always be truthful, I learnt from him
Best is "forgiveness" and now "patience" is firm

His natural endowment, has made me such a seed
This can be a fruit, when one really need
Moral values I got, are precious than gold
I resolute to follow them and will never let them old

I remember those moments, when my time was really worst
He took stand for me and I stood again by that trust
How to stand again, if one falls down
He made me learn and now I am with a crown

Am overwhelmed, what more should I write
Just want him to be happy healthy and bright
He is my friend, my love and my world
He has always made my life blessed and uncurled

- Swati Jain, Vidisha

Letters

Thanks for mailing the latest issue of Chirping Sparrow to me. I have gone through it and second time also after an interval of 8-9 days. So far as the selection of matter, its presentation and its editing are concerned no other Jain magazine can compete with Chirping Sparrow. It is inspiring and explains the basics of Jainism in a reader friendly manner.

Congrats and Regards,
Jay Kumar Jain (Jalaj)

मैत्री सहयोग

मैत्री समूह प्रतिभावान और जरुरतमंद जैन छात्र छात्राओं को मैत्री सहयोग–स्कालरशिप प्रदान करता है। यह स्कालरशिप बारहवीं कक्षा के जैन छात्र छात्राओं को उच्च शिक्षा के लिए दी जाती है। स्कालरशिप के लिए छात्र छात्राओं को http://www.maitreesamooh.com/ पर online आवेदन करना होगा। अन्यथा फार्म down load भी किया जा सकता है।
स्कालरशिप वर्ष में एक ही बार दी जाती है, इस हेतु 15 अक्टूबर 2014 तक आवेदन दिया जासकता है।

Maitree Help

Maitree Samooh invites applications from talented and needy Jain students for its scholarship program. The scholarship is awarded as assistance for higher education to the students who have recently completed XII. Forms can be filled at www.maitreesamooh.com or otherwise forms can be downloaded and filled in hardcopy and sent to Samooh's address.
Scholarship is awarded only once a year and the last date for application is October 15th, 2014

संवेदना को जल समाधि

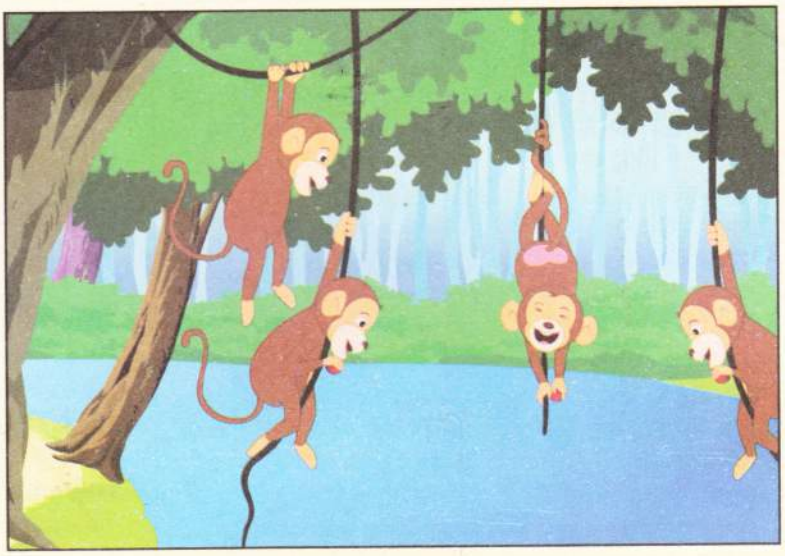

विश्वविख्यात रणकपुरजी जैन तीर्थ के दर्शन कर हम वापसी के लिए वाहन, बस, जीप, टम टम, जो भी मिले, उसका इंतजार कर रहे थे। अरावली की पहाडियों के बीच बहती नदी, डूबता सूरज और इक्का दुक्का मोर देख मन प्रफुल्लित हो रहा था। पास में बेर की कंटीली झाडियों पर, रास्ते पर, बिजली के खम्बो पर वानर सेना उछल कूद कर रही थी ! कुछ जमीं पर पडे टूटे फूटे मटके से पानी पी रहे थे। मेरे साथ के कुछ विदेशी पर्यटक इन मनमोहक पलों को कैमेरे में कैद कर रहे थे।

तभी अचानक एक बन्दर बिजली की तार से टकराकर नीचे गिर गया। मैं तड़पते वानर को देख सिहर गयी। एक ग्रामीण के हाथ से पानी की बोतल ले कर उसे पानी पिलाने चल पड़ी! तभी वह बोल पड़ा, –मैडम जी ! उसके करीब मत जाना, अभी आजूबाजू के बन्दर इकट्ठे हो जायेंगे और वो किसी इन्सान को करीब नहीं आने देंगे। कोई नजदीक गया तो सीधा झपट लेंगे। मैंने उन अनुभवी ग्रामीणों की बात मानी और पीछे हट गई। अगले ही पल दो बन्दर उस घायल बन्दर को उठा कर सुरक्षित जगह पर ले गए। आस पास के सभी बन्दर उन के पीछे चले गए।

जानवरों में इतनी एक दूसरे के प्रति संवेदना, दर्द का अहसास! सुरक्षा का अटूट घेरा और जान बचाने की अथक कोशिश !! मैं देखकर सुन्न रह गई।

कुसुम सुराना

BOOK-POST

Chirping Sparrow

Year - 12, Issue - 1

A Newsletter of Maitree Jankalyan Samiti

From
MAITREE SAMOOH
Post Box No. 15, Vidisha, Madhya Pradesh - 464001
E-mail : maitreesamooh@hotmail.com,
samooh.maitree@gmail.com
Website : www.maitreesamooh.com
http://maitreesamooh.blogspot.com
Mob.: 94254-24984

To, ______________________

____

____